बतख़ का बदसूरत बच्चा

हैंस क्रिस्चियन एंडरसन

बतख़ का बदसूरत बच्चा

हैंस क्रिस्चियन एंडरसन
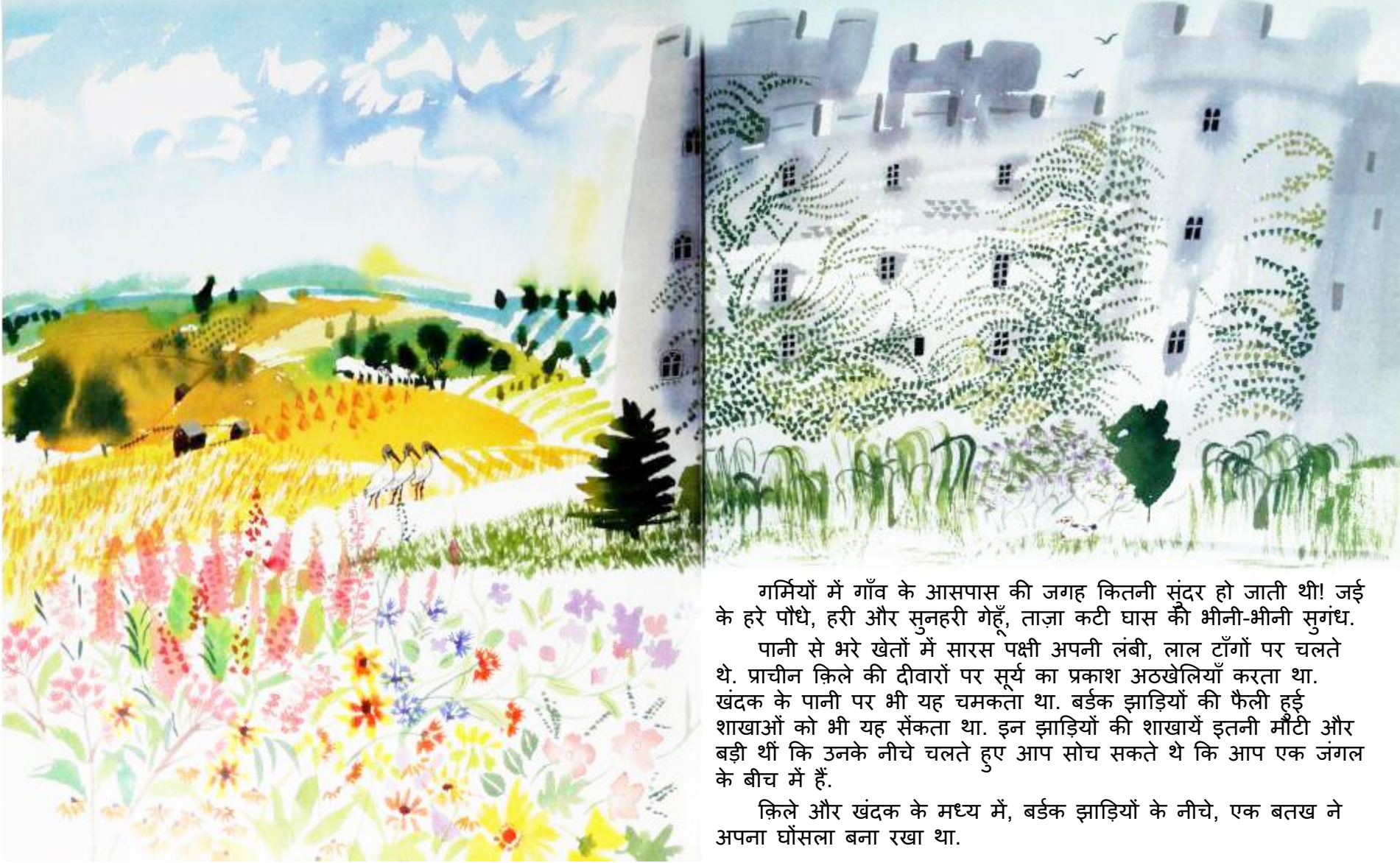
गर्मियों में गाँव के आसपास की जगह कितनी सुंदर हो जाती थी! जई के हरे पौधे, हरी और सुनहरी गेहूँ, ताज़ा कटी घास की भीनी-भीनी सुगंध.

पानी से भरे खेतों में सारस पक्षी अपनी लंबी, लाल टाँगों पर चलते थे. प्राचीन क़िले की दीवारों पर सूर्य का प्रकाश अठखेलियाँ करता था. खंदक के पानी पर भी यह चमकता था. बर्डक झाड़ियों की फैली हुई शाखाओं को भी यह सेंकता था. इन झाड़ियों की शाखायें इतनी मोटी और बड़ी थीं कि उनके नीचे चलते हुए आप सोच सकते थे कि आप एक जंगल के बीच में हैं.

क़िले और खंदक के मध्य में, बर्डक झाड़ियों के नीचे, एक बतख ने अपना घोंसला बना रखा था.

एक-एक कर उसके अण्डे फूटने लगे, एक-एक कर नन्हे सिर अण्डों से बाहर दिखाई देने लगे, नन्हीं आँखें मिचमिचाने लगीं, नन्हीं चोंचें खुलने लगीं. “पीप!” नन्हे बच्चे बोले, “पीप!”

“क्वैक!” उनकी माँ ने कहा. “अपने आसपास देखो!”

बतख के बच्चे आँखें मिचमिचाते हुए हरी-भरी दुनिया को देखने लगे, हरा रंग उनकी दृष्टि के लिए अच्छा था.

“दुनिया कितनी बड़ी है!” बतख के बच्चे बोले.

“बड़ी!” माँ ने कहा. “तुमने अभी आधी दुनिया भी नहीं देखी. यह तो दूर चर्च-चरागाह तक फैली हुई है.” जब बतख खड़ी हुई तो उसने देखा कि एक अण्डा-सबसे बड़ा-अभी भी फूटा न था. “क्या मुसीबत है!” वह बोली. “इसको कितना समय लगेगा? मैं अब पानी में तैरना चाहती हूँ.”

फिर एक वृद्ध बतख, बर्डक की झाड़ियों के बीच से, पंख फड़फड़ाती हुई उससे मिलने आई.

"उनको देखो!" माँ-बतख ने कहा. "क्या यह सब से सुंदर नहीं हैं? लेकिन एक अण्डा अभी भी नहीं फूटा."

"ज़रा मुझे देखने दो," वृद्ध बतख ने कहा. "अरे यह तो टर्की का अण्डा है. तुम्हें इसके लिए परेशान नहीं होना चाहिए. टर्की के बच्चे तो पानी के निकट भी नहीं जाते."

"मैं कुछ देर और इस पर बैठूंगी," बतख ने कहा.

"जैसा तुम चाहो," वृद्ध बतख ने कहा और पंख फड़फड़ाते हुए झाड़ियों के बीच से चली गई.

आखिरकार बड़ा अण्डा भी फूट गया और एक चूज़ा बाहर आया.

"पीप! पीप!" वह बोला. वह बहुत बड़ा और बहुत बदसूरत था.

"यह दूसरों जैसा बिलकुल नहीं लगता," माँ-बतख ने कहा. "मुझे संदेह है कि यह सच में टर्की का बच्चा है."

लेकिन जब माँ-बतख अपने बच्चों को खंदक की ओर ले गई, तब बदसूरत बच्चे को डांट कर या चिकोटी काट कर पानी में धकेलने की ज़रुरत माँ को न पड़ी.

"यह टर्की नहीं है," माँ बोली. "इसे पता है कि टाँगों से क्या काम लेना है. यह अपनी गरदन को भी सीधा रखता है. यह मेरा अपना बच्चा है. वास्तव में," उसने कहा, "अगर ध्यान से देखा जाये तो यह सुंदर ही दिखता है."

बाद में उस दिन, बतख अपने परिवार को सब से मिलाने के लिए बाड़े में ले गई.
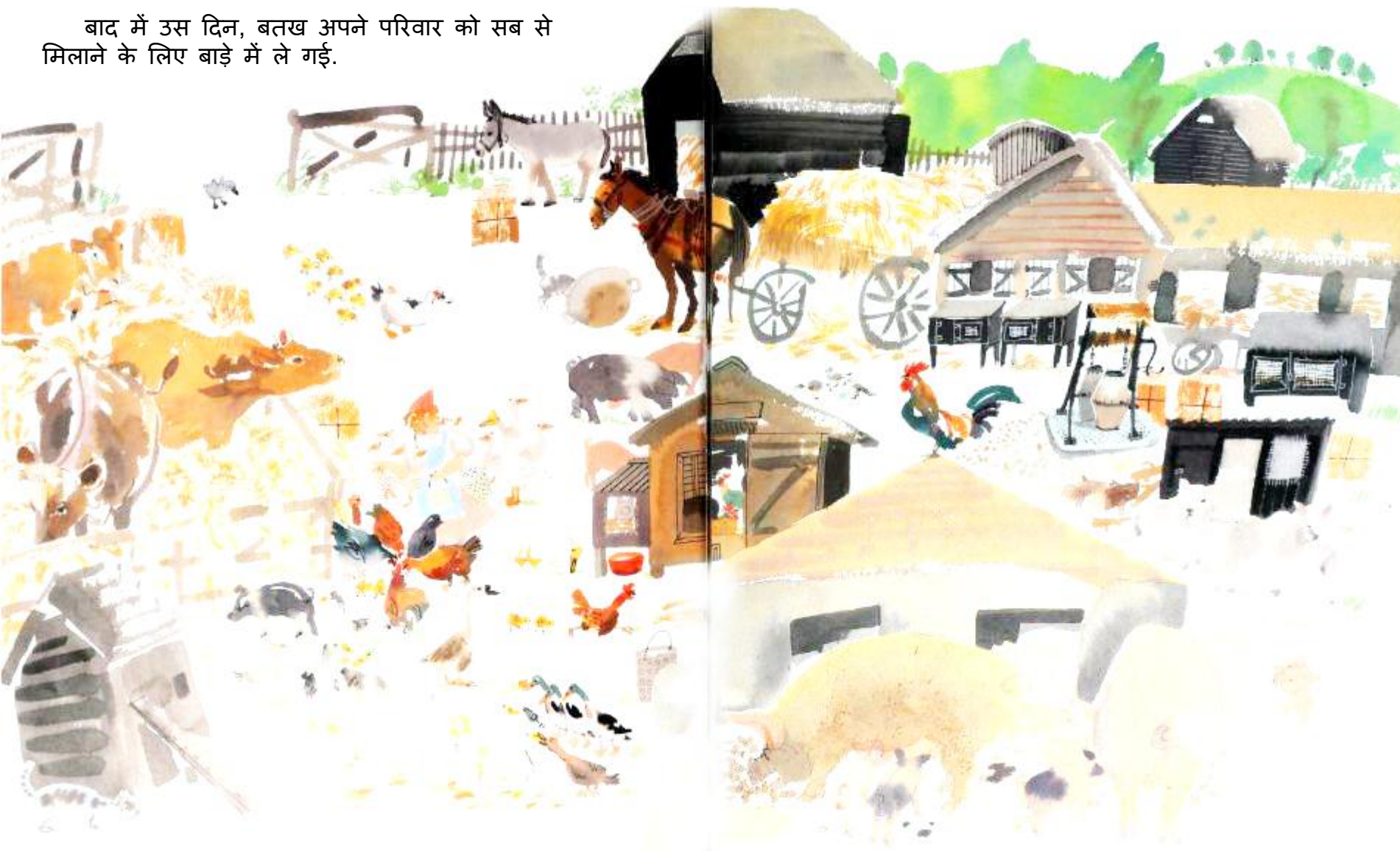
“मेरे साथ-साथ रहो,” उसने कहा, “फिर कोई तुम पर पाँव न रख पायेगा. और बिल्ली से सावधान रहना!”

बाड़े में बतखों के दो परिवार ईल मछली के सिर के लिए आपस में झगड़ रहे थे. लेकिन दोनों में से किसी को वह सिर न मिला! एक बिल्ली झपट कर वह ले गई.

“जीवन ऐसा ही है,” माँ-बतख ने बच्चों से कहा. “क्वैक! ऐसे न चलो! ठीक से बतखों की तरह डगमगाते हुए चलो-टाँगें दूर-दूर रखो, मेरी तरह. और अब मेरे साथ आओ,” उसने कहा. “वृद्ध बतख को अवश्य प्रणाम करना.”

लेकिन तभी अन्य बतखों ने माँ-बतख और उसके छोटे से परिवार को घेर लिया.

“इस झुंड की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है, क्या है?”

“यहाँ पहले ही बहुत बतखें हैं.”

“इस बदसूरत बच्चे को तो देखो! हम इसे यहाँ नहीं रहने देंगे.”

तब एक बतख ने उस बदसूरत बच्चे की गरदन को चोंच से काटा. "उसे तंग न करो!" माँ-बतख चिल्लाई. "उसने तुम्हें कोई कष्ट नहीं दिया."

"यह बहुत बड़ा है," जिस बतख ने काटा था वह बोली. "यह किसी और जैसा नहीं है, क्या यह पर्याप्त कारण नहीं है?"

"कितने प्यारे बच्चे हैं!" वृद्ध बतख ने कहा, "एक को छोड़ कर बाकी सब."

"नानी माँ, वह बहुत ही सुशील और शिष्ट है," माँ-बतख ने कहा. "और वह औरों की भांति अच्छी तरह तैर सकता है. वास्तव में, उन से थोड़ा अच्छा ही तैरता है."

"फिर भी, अन्य बच्चे बहुत सुंदर हैं," वृद्ध बतख ने कहा. "यहाँ आराम से रहो."

लेकिन अन्य बतखें और मुर्गियाँ भी बेचारे बदसूरत बच्चे को धकेलने और चोंच मारने लगीं. नर-टर्की ने उसे निगलने की इतना प्रयास किया कि उसका चेहरा लाल हो गया. नन्हा, दुःखी जीव सोचने लगा कि काश वह इतना बदसूरत न होता. उसे समझ न आया कि अपने को कहाँ छिपाये.

और आज तो पहला दिन ही था. अगला हर दिन पिछले दिन से अधिक डरावना था. बेचारे बच्चे को तो उसके भाई-बहन भी सताने लगे थे, वह उसका पीछा करते और चिल्लाते, "ओ बदसूरत जीव! अच्छा होता कि अगर बिल्ली ही तुम्हें पकड़ लेती!" बतखें उसे काटतीं. मुर्गियाँ चोंच मारतीं. फार्म में काम करने वाली लड़की ठोकर मारती. और आखिरकार उसकी माँ ने भी कहा, "काश तुम यहाँ न होते-काश तुम बहुत दूर होते."

तब बतख का बदसूरत बच्चा भाग गया. वह बहुत दूर तक उड़ता गया, तब तक जब तक की वह एक दलदल में नहीं पहुँच गया जहाँ जंगली बतखें रहती थीं. वह इतना थक गया था कि सारी रात वहीं रुका.

अगली सुबह जंगली बतखों ने उसे अपने बीच देखा.

"तुम किस प्रकार के पक्षी हो?" एक ने पूछा.

"तुम निःसंदेह बदसूरत हो," दूसरे ने कहा. "लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है,"

बदसूरत बच्चे ने अगले दो दिन उस दलदल में, सरकंडों के बीच तैरते हुए और पानी पीते हुए बिताये.

फिर दो जंगली हंस-दो युवा नर-उड़ कर उसके पास आये.

"सुनो, दोस्त!" उन्होंने कहा. "तुम इतने बदसूरत हो कि हम तुम्हें पसंद करते हैं. क्या तुम हमारे साथ आना चाहोगे? आओ चलो!"
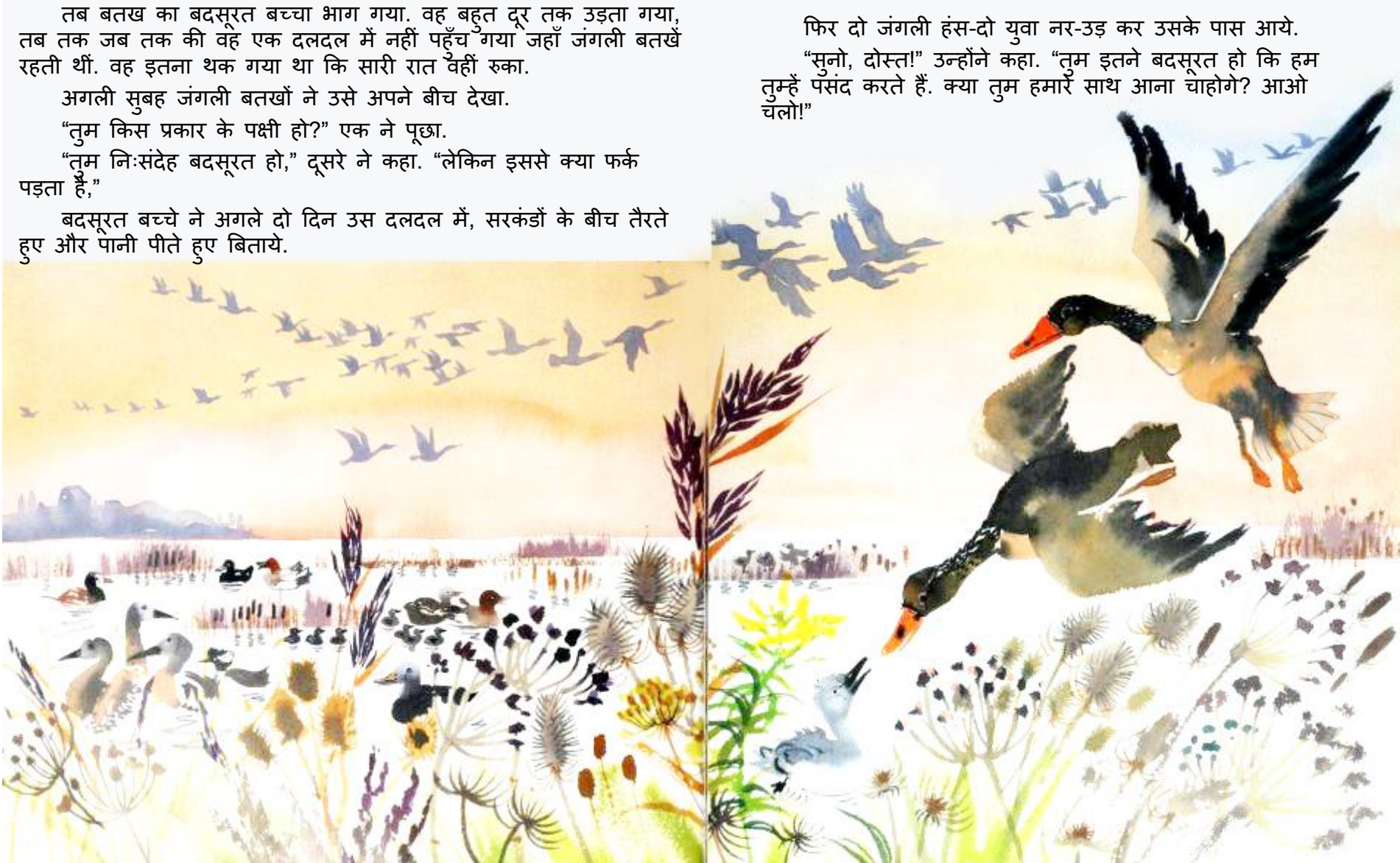
“ठाँय! ठाँय!”
दोनों युवा नर-हंस सरकंडों में मृत आ गिरे; उनके आसपास पानी लाल हो गया.
“ठाँय! ठाँय!” सारी दलदल को बंदूकों ने घेर रखा था. झाड़ियों में बंदूकें थीं, सरकंडों में बंदूकें थीं, पेड़ों में बंदूकें थीं. जंगली हंसों का एक बड़ा झुंड आकाश की ओर उड़ने लगा.

दलदल के ऊपर नीले रंग का धुआँ फैल गया और पानी में कुत्तों के भागने की आवाज़ सुनाई देने लगी.

बेचारा छोटा बतख भयभीत हो गया. अपने को छिपाने के लिए जैसे ही वह अपना सिर अपने पंखों में लपेट रहा था, उसने सरकंडों के बीच से एक कुत्ते को उसकी ओर देखते हुए पाया. कुत्ते की जीभ बाहर लटक रही थी और वह गुर्रा रहा था. लेकिन... फिर छपाक! छपाक! कुत्ता बस घूम कर वापस चला गया.

“हे भगवान!” बतख का नन्हा बच्चा बोला. “मैं इतना बदसूरत हूँ कि एक कुत्ता भी मुझे पकड़ना नहीं चाहता.”

सारा दिन बंदूकें चलती रहीं और कई घंटों के बाद ही बतख का डरा हुआ नन्हा बच्चा अपने सिर को पंखों से बाहर निकालने का साहस कर पाया. फिर वह वहाँ से भागा. वह भाग कर दलदल से बाहर निकला और मैदान के पार भागा और भागता रहा.

शाम के समय, बतख के बदसूरत बच्चे ने एक छोटी झोंपड़ी देखी. एक बूढ़ी औरत अपनी बिल्ली के साथ वहाँ रहती थी. बिल्ली अपनी पीठ को तान कर मोड़ सकती थी, घुरघुरा सकती थी और अगर कोई उसकी फर्र को उलटी दिशा में सहलाता तो बदन से चिंगारियाँ निकाल सकती थी. बुढ़िया की एक मुर्गी भी थी जो खूब अण्डे देती थी.

झोंपड़ी के दरवाज़े की चूल ढीली थी, जिस कारण दरवाज़े में दरार बन गई थी. अँधेरे में बतख का बच्चा उस दरार से भीतर आ गया. अगली सुबह बिल्ली और मुर्गी ने उसे देख लिया.

“अहा!” औरत ने कहा. “भाग्य हमारे साथ है. अगर यह नर नहीं है तो शीघ्र ही हमें अण्डे मिलेंगे.”
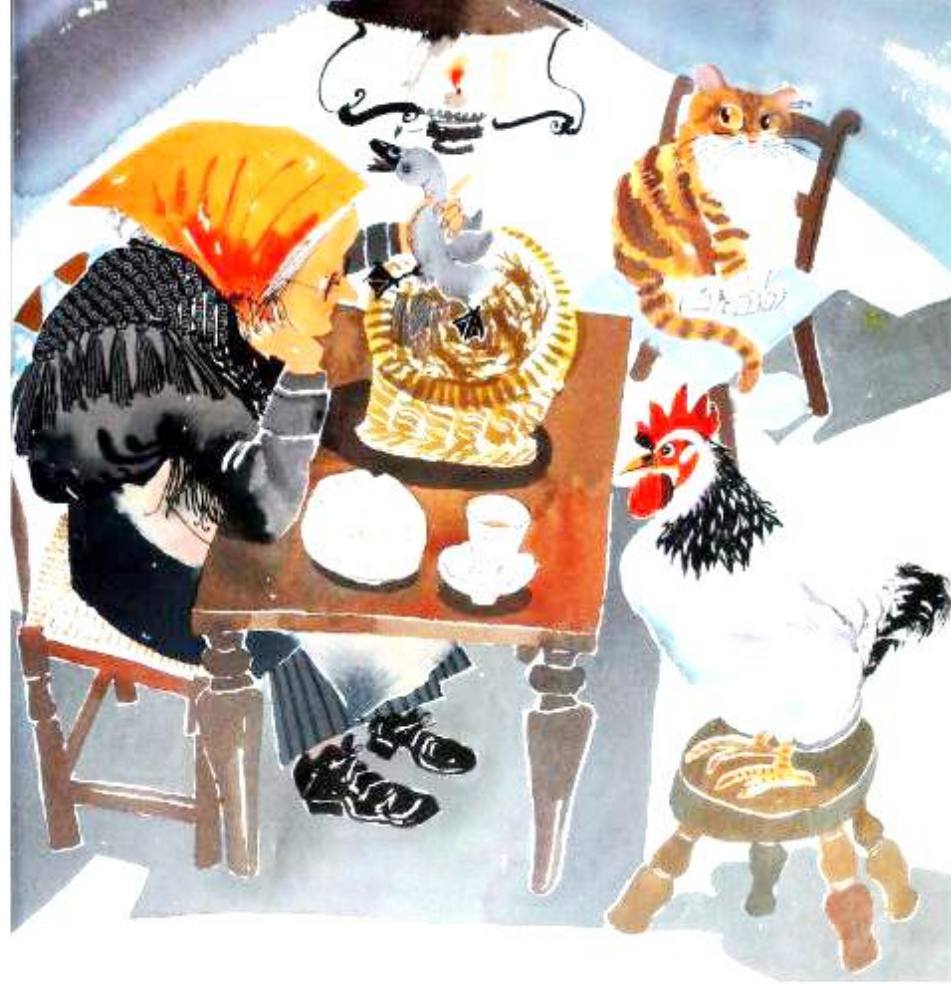
बतख का बच्चा तीन सप्ताह उस झोंपड़ी में रहा. लेकिन बेशक उसने कोई अण्डे नहीं दिये. और बिल्ली और मुर्गी, जो समझती थीं कि वह सब जानती थीं, बतख के बच्चे को कुछ कहने का अवसर ही न देती थीं.

“क्या तुम अण्डे नहीं दे सकते?” मुर्गी ने पूछा.

“नहीं,” बतख के बच्चे ने कहा.

“फिर चुप रहो!”

“क्या तुम मेरी तरह अपनी पीठ मोड़ सकते हो?” बिल्ली ने पूछा. “घुरघुरा सकते हो? या चिंगारियाँ पैदा कर सकते हो?”

“नहीं.”

“ऐसा है तो तुम्हारी बात सुनने का कोई लाभ नहीं.”
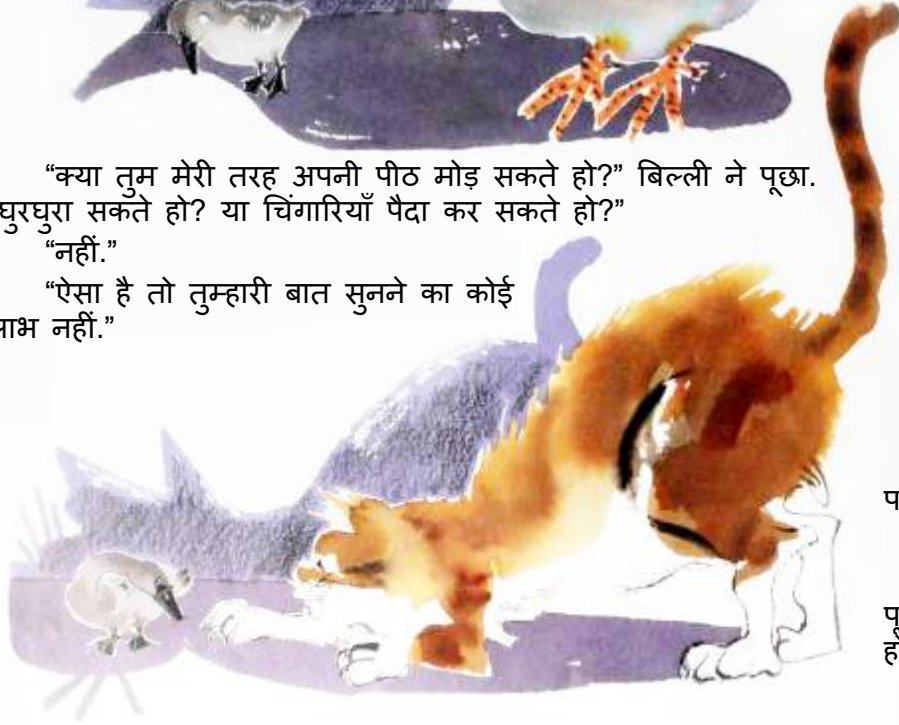
लेकिन जब बतख के बच्चे ने शीतल वायु और सूर्य के प्रकाश के बारे में सोचा तो पानी में तैरने की लालसा उसके मन में इतनी तीव्रता से जागी कि इसके बारे में बात न करना उसके लिए मुश्किल हो गया.

“तैरना! कितना मूर्खता पूर्ण विचार है!” मुर्गी ने कहा. “अगर तुम अण्डे दे सकते या घुरघुरा सकते तो तुम तैरने की बात तुरंत भूल जाते.”

“पानी में तैरना कितना आनंददायक होता है,” बतख के बच्चे ने कहा. “और अपना सिर भिगोना और पानी में डुबकी लगाना भी.”

“आनंददायक,” मुर्गी बोली. “मुझे लगता है कि तुम पागल हो गये हो, पूरे पागल!”

“तुम समझ नहीं रही हो,” बतख का बच्चा चिल्लाया.

“समझती नहीं, क्या मैं नहीं समझती?” मुर्गी ने कहा. “जितना तुम अपने पूरे जीवन में समझ पाओगे, उससे अधिक बिल्ली और मैं समझती हैं. अच्छा होगा कि अब तुम भी कुछ उपयोगी काम करना शुरु करो.”

“नहीं,” बतख का बच्चा बोला. “मैं स्वयं यह विशाल दुनिया देखने जाऊँगा.”

“तुम ऐसा करोगे!” मुर्गी बोली.

तो बतख का बच्चा झोंपड़ी से चला गया और वह चलता रहा, उड़ता रहा, तब तक जब तक कि वह एक झील तक नहीं पहुँच गया. झील में वह तैर सकता था और पानी में डुबकियाँ लगा सकता था. झील में तैरती अन्य बतखें उससे दूर चली गईं क्योंकि वह बदसूरत था.

फिर पतझड़ आ गया और पीले और भूरे पत्ते हवा में उड़ने लगे. उसके बाद सर्दियाँ आईं, आकाश में बादल गिर आये, बर्फ गिरी, ओले गिरे. "काँव! काँव!" जंगले पर बैठा एक कौवा चिल्लाया. "काँव! सर्दी!"

एक दिन सर्दी में जैसे ही सूर्य अस्त हुआ, सुंदर पक्षियों का एक झुंड सरकंडों के बीच से तैरता हुआ बाहर आया. उनके उजले पँख चमक रहे थे, उनकी गरदनें लंबी और आकर्षक थीं. वह राजहंस थे. वह चिल्लाते हुए, अपने विशाल और शक्तिशाली पँख फड़फड़ाने लगे. वह हवा में उड़ने लगे और झील के ऊपर चक्कर लगाने लगे. बतख का बदसूरत बच्चा पहिये की तरह पानी में गोल-गोल घूमने लगा. वह आकाश में उड़ना चाहता था और मन की इच्छा पूरी करने के लिए चिल्लाने लगा.

फिर वो राजहंस दक्षिण में स्थित गर्म जगहों की ओर उड़ चले. बतख के बच्चे ने झील के तल की ओर डुबकी लगाई. वह बहुत दुःखी था. वह उन पक्षियों से इतना प्यार करता था जितना प्यार अब तक उसने किसी से न किया था. उसे पता न था कि वह कहाँ चले गये थे. वह उनका नाम तक न जानता था.

ठंड बढ़ती गई, बढ़ती गई. झील पर जमी बर्फ के चटकने की आवाज़ सुनाई देती. बर्फ में बने सुराख को खुला रखने के लिए बतख के बच्चे को उसमें बार-बार गोल-गोल तैरना पड़ता. पर हर रात बर्फ जमने से वह सुराख छोटा होता गया. आखिरकार बतख का बच्चा इतना थक गया कि वह और तैर न सकता था. उसके चारों ओर बर्फ जम गई और वह बर्फ में फंस गया.

अगली सुबह एक किसान को वह बतख का बच्चा दिखाई दिया. उसने बच्चे के आसपास जमी बर्फ को पाँव मार कर तोड़ दिया और उसे बाहर निकाल लिया. बतख के बच्चे को अपनी बाँह के नीचे दबा कर वह अपनी पत्नी के पास ले आया.

बतख का बच्चा किसान के नटखट बच्चों से इतना डर गया कि उसने पँख फैलाये और सीधा दूध के मटके में कूद गया. वहाँ से निकल कर वह मक्खन की मटकी में जा गिरा और फिर फड़फड़ाता हुआ आटे के पीपे में जा पहुँचा.

किसान की बीवी गुस्से में बतख के बच्चे पर चिल्लाने लगी. एक कुरेदनी लेकर वह उसके पीछे भागी. उड़ता, भागता बतख का बच्चा किसान के घर के दरवाज़े से बाहर आ गया. बर्फ के ढेर के पास वह झाड़ियों के नीचे छिप कर बैठा गया.

बतख के बच्चे के लिए वह सर्दियाँ बहुत ही डरावनी थीं. लेकिन फिर भी किसी तरह अपने को जीवित रखने में वह सफल रहा. और एक दिन उसने सूरज की गर्मी को अपनी पीठ पर महसूस किया. वसंत फिर आ गया था.

बतख के बच्चे ने अपने पँख फैलाये-उसके पँख सुंदर और शक्तिशाली हो गए थे. वह उड़ कर ऊपर आकाश में आ गया और झील से दूर उसने एक सुंदर बग़ीचा देखा. वहाँ सेब के पेड़ों पर कलियाँ खिली हुई थीं और लिलक के पौधे घुमावदार नहर के ऊपर झुके हुए थे.

फिर सरकंडों के बीच से तीन हंस तैरते हुए आए. उन्होंने अपने पँख हिलाए, वह सहजता से पानी पर तैर रहे थे. दूसरी बार बतख का बच्चा बहुत मायूस हो गया.

“वह शाही पक्षी हैं,” उसने कहा, “मैं उड़ कर उनके पास जाऊँगा. और अगर वह मेरे टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं क्योंकि मैं बदसूरत हूँ या क्योंकि मैंने उनसे बात करने का साहस किया.......तो बतखों से काटे जाने और मुर्गियों से नोचे जाने और फार्म की लड़की की ठोकर खाने और ठंड में ठिठुरने के बजाय वही उचित होगा.”

यही सोच कर बतख का बच्चा उड़ कर नीचे पानी में आ गया. वह राजहंसों की ओर तैर कर गया. राजहंस घूम कर उससे मिलने आए.

बेचारे जीव ने अपना सिर झुका लिया और पानी को देखने लगा. वह प्रतीक्षा करने लगा कि राजहंस काट कर उसे मार डालें. लेकिन यह क्या? अब वह बेडौल और भूरे रंग का न था. वह फूहड़ और भद्दा और बेढंगा न था. वह बदल चुका था. वह राजहंस था!

तीनों राजहंसों ने उसे घेर लिया और बड़े प्यार से चोंचों से उसे छुआ.

हंसों के लिए ब्रेड लिए हुए कुछ बच्चे नहर के पास आए. "देखो! वहाँ एक नया हंस है!" बच्चे चिल्लाये और अपने माता-पिता को यह बात बताने के लिए वह सब घर के भीतर भागे.

"जब मैं बतख का बदसूरत बच्चा था," उसने कहा,
"तब मुझे पता न था कि जीवन में ऐसा आनंद भी होता है."

फिर सारे परिवार ने हंसों को ब्रैड और केक खिलाया और वह सब इस बात से सहमत थे कि नया हंस सबसे सुंदर था. बड़े हंस बार-बार उसके सामने अपना सिर झुका रहे थे.

नया छोटा हंस झेंप रहा था और लज्जा में उसने अपना सिर अपने एक पँख के नीचे छिपा लिया. वह प्रसन्न था, बहुत प्रसन्न. लिलक के सफेद और बैंगनी फूल उसके लिए पानी में झुक गए. उसके लिए सूर्य भी उत्साह से चमक रहा था. उसने अपने पँख फड़फड़ाए और अपनी सुंदर गर्दन को घुमा कर तान दिया.

समाप्त